

## श्लोक

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विंभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।  
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीह। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥  
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥  
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥  
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥  
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्बालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥  
चलत्कुंडलं भू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥  
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥  
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥  
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥  
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥  
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥  
न यावद उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥  
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥  
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥  
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ ९ ॥